प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम के नाम से ज्ञात 1857 का विद्रोह औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध भारतीयों की प्रथम सशक्त व संगठित अभिव्यक्ति थी।

25 जुलाई 1857 को दानापुर छावनी स्थित तीन रेजीमेंटों के भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर शाहाबाद जिले में स्थित जगदीशपुर के जमींदार बाबू कुंवर सिंह से मिल गए। 80 वर्ष की अवस्था में कुँवर सिंह ने जमींदार होकर भी अंग्रेजों का सशक्त विद्रोह किया।

दो मोर्चे - आरा तथा बीबीगंज

छापामार युद्ध प्रणाली (शिवाजी के पश्चात प्रथम निष्णात भारतीय)

अविचित तथा मानवीय दृष्टिकोण वाले थे।

अवध के नवाब तथा नाना साहब के युद्धों में भी समर्थन किया। उन्हें जनता का समर्थन प्राप्त था - नदी पार करने में शिवपुर के ग्रामीणों ने हर संभव सहायता की थी

बिहार में 1857 के विप्लव के उद्भव के कारण -

1765 में बिहार एवं बंगाल में अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ ही इस क्षेत्र में उनके शोषण के विरुद्ध स्थानीय प्रकृति वाले जनजातीय एवं कृषक आंदोलनों की एक लंबी श्रृंखला की शुरुआत हुई।